इधर-उधर घूमने को चंक्रमण कहते हैं।

चञ्चलत्व—चञ्चलत्वं कुत्राप्यवस्थितचित्तत्वाभावः। (योगशा. स्वो. विव. २-८४)।

चित्त की कहीं पर भी स्थिरता के न रहने का नाम चञ्चलत्व या चञ्चलता है।

चण्डालीक—चण्डः क्रोधस्तद्वशादलीकम् अनृतभाषणं चण्डालीकम्। भयालीकाद्युपलक्षणमेतत्। यद्वा—चण्डेनाऽऽलमस्य चण्डेन वा कलितश्चण्डालः, स चातिक्रूरत्वाच्चण्डालजातिस्तस्मिन् भवं चाण्डालिकं कर्मेति गम्यते। (उत्तरा. सू. शा. वृ. १-१०, पृ. ४७)।

चण्ड नाम क्रोध का है, उसके वश जो असत्य भाषण किया जाता है वह चण्डालीक कहलाता है। अथवा—क्रोध के कारण वह कलंकित होता है इससे या चण्ड (क्रोध) से युक्त होने से उसे चण्डाल कहा जाता है। इस प्रकार अतिशय क्रूर कर्म के कारण चण्डाल जाति प्रसिद्ध हुई। इस चण्डाल जाति में होने वाले कर्म को चाण्डालिक कहा जाता है।

चतुरङ्गजल्प—चत्वारि वादि-प्रतिवादि-प्राश्निक-परिषद्बललक्षणानि अङ्गानि यस्य स चतुरङ्गो जल्पः। (सिद्धिवि. वृ. ५, २; पृ. ३१३, पं. १२-१३)।

वादिबल, प्रतिवादिबल, प्राश्निकबल और परिषद्बल इन चार अङ्गों से युक्त जल्प को चतुरङ्गजल्प कहा जाता है।

चतुरस्रनाम—१. जस्सुदएणं जीवे चउरंसं नाम होइ संठाणं। तं चउरंसं नामं ×××॥ (कर्मवि. ११३)। २. चतुरस्रं चतुष्कोणं। (संग्रहणी दे. वृ. २७२)।

१ पैर के अंगूठे से लेकर शिर के बालों तक जितना ऊंचाई का प्रमाण हो उतना ही प्रमाण दोनों भुजाओं के फैलाने पर तिरछा भी हो, इसे चतुरस्र कहा जाता है। जिस कर्म का उदय होने पर इस प्रकार के आकार वाला जीव का शरीर होता है उसे चतुरस्र नामकर्म कहते हैं।

चतुरिन्द्रियजातिनाम—१. जस्स कम्मस्स उदएण जीवाणं चउरिंदियभावेण समाणत्तं होदि तं कम्मं चउरिंदियजादिणामं। (धव. पु. ६ पृ. ६८)। २. चतुर्णां स्पर्शन-रसना-घ्राण-चक्षुर्ज्ञानानाम् आवरणक्षयोपशमात् चतुर्विज्ञानभाजः चतुरिन्द्रियाः। ××× चतुरिन्द्रियाणां जातिनाम चतुरिन्द्रियजातिनाम। (कर्मस्त. गो. वृ. १०, पृ. १७)। ३. यदुदयाज्जन्मी चतुरिन्द्रिय इत्यभिधीयते तच्चतुरिन्द्रियजातिनाम। (त. वृत्ति श्रुत. ८-११)।

१ जिस कर्म के उदय से जीवों के चतुरिन्द्रियरूप से समानता होती है उसे चतुरिन्द्रिय जातिनामकर्म कहते हैं। २ स्पर्शनादि चार इन्द्रियों से होने वाले चार ज्ञानों के आवरण के क्षयोपशम से जो जीव चार ज्ञानों से युक्त होते हैं वे चतुरिन्द्रिय कहे जाते हैं। चतुरिन्द्रियों का जातिनामकर्म चतुरिन्द्रिय जातिनामकर्म कहलाता है।

चतुरिन्द्रिय जीव—१. फासिंदियादिचउहि इंदिएहि जुत्तो जीवो चतुरिंदिओ णाम। (धव. पु. ७, पृ. ६५)। २. एते स्पर्शन-रसना-घ्राण-चक्षुरिन्द्रियावरणक्षयोपशमात् श्रोत्रेन्द्रियावरणोदये नोइन्द्रियावरणोदये च सति स्पर्श-रस-गन्ध-वर्णानां परिच्छेत्तारश्चतुरिन्द्रिया अमनसो भवन्तीति। (पंचा. का. अमृत. वृ. ११६)।

१ स्पर्शन आदि चार इन्द्रियों से युक्त जीव चतुरिन्द्रिय कहलाता है। २ स्पर्शन, रसना, घ्राण और चक्षुइन्द्रियावरणकर्म के क्षयोपशम से तथा श्रोत्रेन्द्रियावरण और नोइन्द्रियावरण कर्म का उदय होने पर स्पर्श, रस, गन्ध और वर्ण के जानने वाले जीवों को चतुरिन्द्रिय कहते हैं। वे मन से रहित होते हैं।

चतुरिन्द्रियलब्धि— जिब्भा-फास-घाण-चक्खिंदियावरणाणं खओवसमेण समुप्पण्णा सत्ती चउरिंदियलद्धी। (धव. पु. १४, पृ. २०)।

जिह्वा, स्पर्श, घ्राण और चक्षु इन्द्रियावरणों के क्षयोपशम से जो शक्ति उत्पन्न होती है उसका नाम चतुरिन्द्रियलब्धि है।

चतुर्गतिनिगोद—जे देव-णेरइय-तिरिक्ख-मणुस्सेसुप्पज्जियूण पुणो णिगोदेसु पविसिय अच्छंति ते चदुगइणिगोदा भण्णंति। (धव. पु. १४, पृ. २३६)।

जो निगोद जीव देव, नारकी, तिर्यंच और मनुष्यों में उत्पन्न होकर पुनः निगोद जीवों में प्रविष्ट होते हैं वे चतुर्गतिनिगोद कहलाते हैं।

चतुर्थ असत्य—देखो असत्य (चतुर्थ)। गर्हितमवद्यसंयुतमप्रियमपि भवति वचनरूपं यत्। सामा-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org